

मिशन

**राज**

कॉमिक्स  
विशेषांक

मूल्य 16.00 संख्या 155

# साम्भोहन

नागराज



महाराज की कई घातक शक्तियों में से एक है। उसकी सम्मोहन शक्ति! और यह शक्ति आमतौर पर सभी जातों में कम या ज्यादा मात्रा में पाई जाती है। सम्मोहन का अर्थ हमेशा जादू-टोने से जोड़ा जाता रहा है। शत्रु सम्मोहन का असली संबंध तो इच्छा शक्ति से है। सम्मोहन करने वाले की इच्छा शक्ति दूसरे पर इतना बल से हावी हो जाती है कि वह वही करता है, और देखता है, जो सम्मोहक करना या दिखाना चाहता है। ... सम्मोहन का संबंध जादू-टोने से चाहे न ही, पर मानसिक शक्तियों से जरूर है। क्योंकि तीव्र सम्मोहन के बिना दुनिया और ब्रह्मांड की हिला सकने लायक मानसिक शक्ति होती है। और जो इतना मानसिक शक्ति का इस्तेमाल करने का तरीका खोज निकालते हैं, वे सारी दुनिया पर फैला सकते हैं ...

# सम्मोहन

संजय गुप्ता की पेशकश

लेखक: जॉली सिन्हा, चित्र: अनुपम सिन्हा  
इंकिंग: विट्ठल कांबले, बिलोदे कुमार  
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय  
सम्पादक: मनीष गुप्ता



मुझे भगाने की कोशिश करना बेकार  
लावाराज! तबही वापस आया  
व उसका काम हो जाएगा। बेकार  
अभी मौत को मार चुकाओ!

महा सम्मोहक कर्णवर्मा  
के रहते लावाराज का कुछ  
नहीं ब्रिग डेरा इच्छाधारी  
वाला!

इसकी मणि प्राप्त करने की  
कोशिश करो लावाराज! इस मणि में इसकी  
आज भी बसती है, और तुम्हारी इच्छा शक्ति  
तक की वजह से करने वाली सम्मोहन शक्ति थी!

महाजान की आवाज़ी एक करोड़ की है। और बाहर से यहाँ बूरीलिस किती जी कलाकार के लिए अपनी कला का प्रदर्शन रोज काम करने आने वालों की संख्या लाखों चार लाख है—कलने की इससे बेहतर जगह ही ही नहीं सकती—

ओ, भारती ! तुम जानती हो कि मुझे भीड़-भाड़ में रहना पसन्द नहीं है। और मैंने जाने, डान, जादू-तमाशों के प्रोवाओं में मुझे जहाँ भी विलचस्पी नहीं है ! मैं... मैं बोर हो जाता हूँ !...

तुम्हारी यही तो प्रॉब्लम है राज ! निर्फ समस्या... अघराध और आतंकवाद के अलावा तुम और कुछ करते ही नहीं ! और इनसान की जिन्दगी के और भी पहलु होते हैं ! और उलू पहलुओं में सबसे जरूरी पहलु है मनोरंजन ! एक बार को देखो तो सही ! फिर तुमको पता चलेगा कि तुम क्या गिरा कर रहे थे !...

... कायद बनसे तुम जितनी को दूसरे मजदूर से देखने लखी नागराज ! और मुझे भी !

मेरे जादू के शोज तो बहुत ज्यादा बरिष्ठ होते हैं ! जादू के नाम पर हाथ की सफाई दिखाने हैं ! जबकि मैं तो सेंस-सेंस जादू देख चुका हूँ, जिसको देखकर इन सभी दर्शकों की या कायद इस जादू-शर की चढ़कन तक आया !

ये जादूगर वैसा नहीं हैन—कोरज हलाकि इसका नाम पहलीबार निर्फ दो नहीं ने पहले सुनाया था ! लेकिन लोगों का कहना है कि कणवड़ी जादू-गर सचमुच जादू दिखता है ! हाथ की सफाई नहीं ! इसका शोज देखने वाले बहुतकी सेंसरी तारीफें कलने हैं, जैसे इसके गुलाम ही !

सेना है तो देख लेते हैं ! क्योंकि राज निर्फ तुम्हारी परवादा करो, मेरे एक तक बैठा रह सकना है ! बार कहते ही यहाँ से तक नागराज का कहीं भी चाल देखी ! तुलना नहीं आ जाल !

प्रॉमिस ! अब देकाज खोवा और शो का मजाली !



तभी दूसरा धीरे करणवड़ी के स्टेज पर प्रकट होने का इन्तजार कर रहे थे-



लेकिन करणवड़ी के बजाय, स्टेज पर कुछ और अकर गिरा-



...दुनिया जानती है, और कहती है कि गुजरा हुआ वक्त कभी वापस नहीं आता। इंसान बड़ी उस से छोटी उस से वापस नहीं आ सकता। मरकर वापस नहीं आ सकता!



यानी कंकाल से जिन्दा इंसान नहीं बन सकता। पर आप देव रहे हैं। और मैं कह रहा हूँ, वक्त को वापस पलटावा जा सकता है!



कंकाल से जिन्दा इंसान बन सकता है! लेकिन तभी जब उस कंकाल को बलवा हो जादूगरों का कहना है-- करणवड़ी!



देखा तुमने लवराज ! क्या दौड़  
रमियरने था करणवड़ी का ! पर ये ट्रिक  
उसने की कैसे होगी ? वह तो दूटे  
कंकाल से जिन्दा इन्सान में बदल  
गया !

कैसी ट्रिक आरती ? वह  
तो चुपचाप आकर खड़ा  
हो गया ! कुछ धाँसे-धध -  
लावा जलकर मारे ! पर उसमें तो  
कुछ भी दौड़ नहीं था !



क्या बात कर रहे हो राज ? पहले कंकाल  
के टुकड़े गिरे, फिर कंकाल जुड़ा, फिर कंकाल  
पर वस्त्रें, हाँस और खाल चढ़े, और फिर  
जीता-जागता करणवड़ी बन गया !



तुम तो वाप थे क्या ?  
स्वैर, अब देखो, करणवड़ी आठो क्या  
करता है ! पर एक बात तो सानसी पड़ेगी !  
करणवड़ी सचमुच का जदू जानता है !

आरती क्या कह रही है ?  
मैं तो लवराज को देख रहा हूँ !  
तुम्हें कुछ क्यों नहीं दिखा ?



मेरे ओ की झुझुलकी  
परबु करने के लिए धन्यवाद  
पर सौत और सौत से वापस जिन्दगी  
की तरफ आने के बीच में मैंने कुछ  
देखा ! मुझे तो वह देखने के लिए  
समना पड़ा ! पर आप लोग उसे मरे  
बिना ही देख सकते हैं !



और वह लवराज है,  
मर्क का लवराज !



अभिले ही पल हर दर्शक की आंखें फैल गईं।  
पहले आश्चर्य से! और फिर अचानक—

य... यह हवा  
कहां आ रहा है?  
ये तो लचमुच  
नर्क ला रहा है!

पर... मैं तो  
स्वर्ग-नरक जानता  
हीं नहीं हूँ!

क्योंकि न अजै कैसे पुनः ऑडिटोरियम, नर्क का रूप धारण करता जा रहा  
हा हा हा! यहां पर तुम्हारे पापों का हिसाब होगा,  
मानवों! हर पाप के लिए एक अलग सजा!  
सदियों तक तब पोंगे तुम लोग!

ये तो यमदूत लग  
रहे हैं! क्या हम मर गए  
हैं?

पापों का हिसाब मारने  
के बाद ही होता है!

मैं तो जल-जल  
में तो जल-जल  
में तो जल-जल  
में तो जल-जल

चोट तो लचमुच में  
लगा रही है! यह जड़  
नहीं हो सकता!

बचाओ! बचाओ, करणवर्ती!  
ये तुम हमको कहां ले आ रही हो?

आरंभी पर भी बुरी दुआएं रही थी—  
यह सच नहीं  
बचाओ! मुझे इस  
यमदूत से बचाओ नाराज!  
यह मुझे आग में जलाने  
जा रहा है! पर... पर तुम तो  
सब यमदूत के झिकजे में  
हो! तुम मुझे कैसे बचाओगे?

यह सच नहीं  
हो सकता! मैं जल  
कोई सपना देख  
रही हूँ!

नाराज! वह कौन है? तुमको अगर  
कोई बचा सकता है तो सिर्फ मैं!

महाजलद्वार  
करणवर्ती!



भारती के कानों तक मेरी आवाज नहीं पहुंच रही है। साथ ही साथ ऑडिटोरियम में बैठे लगभग सारे दर्शक कुछ न कुछ चिल्ला रहे हैं। बात कुछ और ही है। मुझे पता लगाना ही होगा कि भारती के साथ-साथ ये सब भी ऐसा क्या देख रहे हैं, जो इनके होश फावना किस्म का है। पर यह कैसे पता चलेगा कि भारती क्या देख रही है?



सर्पो से तो मेरा ग्राहक संपर्क हमेशा ही बना रहता है। मैं दूसरा रूप में अपने विशेष गज सर्पिष्क को भारती के शरीर में प्रवेश कराता हूँ। यह भारती के रक्त के साथ वृद्धि इसके मस्तिष्क तक पहुंचेगा, और फिर मेरे पास उस घटनाक्रम के भौतिक संकेतों को प्रेषित करेगा जो इस वक़्त भारती के दिमाग में चल रहा है। ...



भारती की रक्त धमनियों में होता हुआ सपिष्क भारती के मानिष्क की भूल-दुलैया में जा पहुंचा-

और 'विद्युत सस्मोहन' के रूप में भारती के दिमाग में बह रही विचार-तरंगों का संपर्क नाराज के मानिष्क में जोड़ने लगा-

भारती के दिमाग में उभर रहे दुःख नाराज के दिमाग में भी उभरने लगे-

और नाराज वॉक उठा-



★ स्पुलिंग यानी बिखरिख (SPARK)

ओह! करणवक्की जावु दिवाने के सिस् सस्मोहन का प्रयोग कर रहा है। और सस्मोहन के जरिये वह इन दर्जकों को अघात करने वाले दुःख दिना रहा है!

भारती लिफ मुके नती करणवक्की का 'ग्रेड स्पियरेंट' दिवाई पड़ा, और न ही मर्क के ये दुःख क्योंकि मुझे सस्मोहित कर पाने की क्षमता करणवक्की के पास नहीं है। पर करणवक्की दर्जकों को खुद का करने के बजाय अघात क्यों कर रहा है?



खैर! अभी यह सीधे का वक्त नहीं है। किसी कसजोर दिल वाले की हृदय गति भी रुक सकती है। मुझे इससे सस्मोहन को काटना होगा। और वह भी चुपचाप। वरना करणवक्की को राज की सस्मोहन, काफी देरकर काक हो सकता। और उससे मेरा भेद खुल सकता है। एक दूसरा रास्ता है!



अभी करणवक्की का मानिष्क सस्मोहन-तरंगों के जरिये भारती के मानिष्क में जुड़ा हुआ है। और भारती का मुकदसा यानी मैं भारती के दिमाग के जरिये करणवक्की के दिमाग तक पहुंच सकता हूँ!



अचानक ही पल्लवराज की आंखों में स्फोडन लगीं निकल कर भारती की आंखों में ठकड़ाई-



और फिर वे तरंगों करणवशी की उल्टी स्फोडन तरंगों को गूट करतीं अगोचरों नहीं जिसका संपर्क भारती में था-

य... यह क्या? मेरा जादू टूट गया। किसी ने मुझ पर 'विपरीत स्फोडन तरंगों' से वार किया है। पर किसने? इनका जादू क्यों है! काजिदानी स्फोडन इन दर्शकों में से किसके पास है! किसके पास?



मैं... मैं लर्क में कैसे चली गई थी राज? और फिर वापस कैसे आ गई?



लल्लवराज की स्फोडन तरंगों के करणवशी के मन्त्रिष्क में धुनतीं ही करणवशी के मन्त्रिष्क को एक जोरदार भटका लगा-



और करणवशी के मन्त्रिष्क का वह भाग कुछ पानी के निम्नतम हो गया, जो स्फोडन पैदा कर रहा था-

साथ ही साथ-वह स्फोडन-जाल भी चिन्न-खिल हो गया, जो दर्शकों की भावना दृढ़ दिवा रहा था-



आह! हमारी वापस अडिटरियम में आ गए!

मेरे रव्याल ने मेरी जिदगी भी उसी थोड़ी सी बची है। अचर्य यहां पर रुका तो वह जादू नहीं बचेगा!



अजी चलो! इनके मुंह क्यों लगा रहे हो? इनकी जीते जी यमवर्ती में पिटा दिया!



बलाकंवा भारती! फिल-हाल तो इन भीष के साथ-साथ तुम भी यहां से बाहर निकल कर घर चली जाओ! मैं किसी को समझकर उसी आता हूँ!

करणवकी कीध से उबल रहा था-

किमी से मेरे काल में व्यवधान  
पहं चला है। और उसके पास  
तीव्र सम्मोहन करने है। मुझे  
उसकी बुद्धि ही होगी। मुझे  
तो बुद्धि देने के लिए और  
दूतरे उसकी सम्मोहन करने  
को अपने काल में लाने के लिए।  
वह इसी भौड में कहीं है। मुझे  
इस भौड को यहीं पर रोक  
कर उसे बुद्धि होगी।

इत आवाजी भौड की सम्मोहन करना जरा  
मुश्किल काम है। लेकिन यहाँ पर और भी जीवन  
वस्तु मौजूद है। और हर जीवन वस्तु के अंदर दिमा  
या दिमाग जैसा कोई और संचालन के द्रो होता ही  
है, जिसे सम्मोहन किया जा सकता है।

जीवन वस्तु जैने  
वायरस, बैक्टीरिया  
और अन्य अति  
सूक्ष्मजीव।

और हवा में  
मौजूद कराडो सूक्ष्म प्राणी स्फ-  
दुस्तर से जुड़कर एक अयातन रूप धारण करने लगे-

बाहर जाने के रास्ते पर  
यू... यह क्या चीज आ गई  
? ये तो जैसे हवा में प्रकट  
हो रही है!

यह करणवकी का जादू है। मुको  
मना! भागते रहो। यह भी कोई असली चीज  
वहीं, बल्कि यमदुत जैसी काल्पनिक चीज है।

करणवकी की आँखों से निकलकर  
सम्मोहन तरंगों हवा में  
फैलने लगी-

लेकिन अब बढ़ते  
ही सबकी पता चला गया कि वह  
वस्तु काल्पनिक नहीं थी-

हा हा हा! अब कहाँ भागोते तब तक  
आवा, आवा! कौकी का  
पोंच प्राणी बना  
डालना है!

बाहर जाने का हर  
रास्ता रोकने के लिए...

मुझे

करावड़ी पर हमला करने की  
जुर्न किसने की ? किसकी हिम्मत  
हुई उसका 'सुसोहन ध्यान'  
भेदा करने की ?



ओह ! नाम तो कुछ सुना : सुना तो लगा  
रहा है ! कहाँ सुना है ? खैर, याद आ  
ही जायगा ! पर तुने मुझे पर हमला  
क्यों किया ?



रोकेगा ? तु मुझे रोकेगा ?  
तबाल सलोक करवाड़ी की ?  
पहले तु मेरे दूता बचाए गए प्राणी को  
रोकेले !

नवराज की !



उसके लिए मुझे खेद है !  
दरअसल तुमको रोकने का और  
कोई फटाफट तरीका मुझे लम्बे  
में नहीं आया !



... और अगर जिद्दा  
बच सकती अपनी  
यह डूबना भी पूरी  
कर लेना !

# धनराज

यह क्या चीज है ? इसको कणवल्ली  
से जरूर उस देश में पैदा किया होगा, जब  
मैं छिपकर राज से तावराज का रूप धारण  
कर रहा था। इसका वार तो मुझे सेमेलरा,  
जैसे किसी ने रुई के अरी गद्दे से मारा  
हो। पर मेरा वार इसके अर-पर ही जा  
रहा है। कोई और वार करना पड़ेगा!



लेकिन इससे  
पहले कि तावराज और कोई कर मोच  
पाए, वह सोच उसके हाथों से जता  
रहा—



पर... पर ये बदल  
जैसा प्राणी आखिर  
है क्या ? तावराज के विचार  
अपने सपने तक अपने-  
आप पहुंच जाते हैं—

अरे! अरे! अब  
बदल जैसा यह प्राणी मुझे अपने अन्दर  
समेट ले रहा है। मेने तो यह मेरा दम छोड़ देना है... पर उसके बाद  
सामान्य इसल के मुकाबले दम गुना ज्यादा देर तो मुझे भी सोस लेने की  
तक सोस लेक सकता है! ... (अवश्यकता पड़ेगी ही  
पड़ेगी!)

और जवाब भी तावराज की  
आपने लह में तैरते सूक्ष्म  
सर्पों में ही मिला—

तुम बड़े रूप में होने के कारण  
उस कर्णों को नहीं देख पा रहे हो  
तावराज! जिसमें इस प्राणी का  
विकास हुआ है। इस सूक्ष्म रूप में  
होने के कारण सफ देख पा रहे  
हैं कि वे कण दरकलन जीवाणु  
विषाणु तथा अन्य सूक्ष्म जीव  
हैं। ये तुम्हारे विष में तुम्हारे  
मर जाएंगे!



ओह! अब तबका! कणवल्ली  
में इन सूक्ष्म जीवियों तक को  
सम्मोहित करने की क्षमता है।  
वे उसके झुर्रे पर ही मेरा  
कर रहे हैं। ये मेरे विष में मर  
तो जाएंगे, पर तब, जब ये मेरे  
विष के संपर्क में आने लें। और  
मेरा सिर्फ तब ही सकता है जब मैं विष-  
संस्कार छोड़ें या इनको अपने शरीर के अंदर  
स्वींचू। देखो ही कसों मैं सोस की जरूरत पड़ेगी।  
जो मैं अभी तले सकता हूँ, जहोड़ सकता हूँ!

आह! सूक्ष्म  
किया जा सकता  
है!

अब रहा है तावराज ?  
तु तो मेरी सूक्ष्म ही टक्कर  
में चित हो गया!



लेकिन नाराज तो चित्त हुआ था, और नही आता रहा था। वही तो उस तरीके की आज्ञाओं जगहा था जो उसे मुक्त जीवियों की कैद से आजाद कर सकतें।

और टेरिगल जैसी किसी मरुजकी जगहा पर आता हुआ तो के लघुनों की उपलब्ध मरुत आता है। ऐसा कहना यहाँ पर भी है। मैंने अंदर जाने मरुजकी पर लगे कई 'अग्निशमन यंत्रों' को देखा था। पर किलहल तो मैं कुछ देखा नहीं पा रहा हूँ। मुझे अनुमति मेरी उस दिशा में बढ़कर उस मरुत तक पहुँचना है, जहाँ पर ये यंत्र लगे हुए हैं।



नाराज की अपनी 'सर्प-इंद्रिय' का इस्तेमाल करने हुए सभी स्थानों पहुँचने में ज्यादा समय नहीं लगा-



ये रहे अग्निशमन यंत्र जो आता की दुकानों में यहाँ फटा मेकटिक्टो-मकल होने के साथ-साथ इसके अंदर जो मरुतों में अग्निशमन यंत्रों की कोई हस्त है, उसकी प्रतिक्रिया होती है। जब ये यंत्रों में कोई लघु आता हुआ है, तो इस 'मरुत' की कोई चेतना होती है। जब पर पड़े तो ये मरुत जीवियों की आर-नाष्ट हो जाते हैं। कोई भी जीवित या विषाणु ज्यादा ठंड में जलवा नहीं रह सकता।



मरुत में कई डिवाइसों के ताप-मात्र ले कुछ ही पलों में उस मरुत जीवियों कैद की फिल-सिल कर दिया-



और नाराज आजाद हो गया-

कमलवा की भी यह जानने में ज्यादा देर नहीं लगी कि उसका वार अंतर्गत हो गया। नाराज के चक्कर में अब मुझे भी क्या मरुत ध्यान भटक गया, और कई दुर्गों की बाहर जाने का मौका मिल गया। अब इस मरुत की रोके मरुतों का कोई मरुत नहीं है।



य... ये सांकेतिक अमली में आ गया? साथ-

मैं फिर वपन आ रहा हूँ कणवली! और इस बार तुमको रोकेलेका सबसे अच्छा तरीका मुझे यही लगता है आर्य!

बुद्ध गया! और तेरे हाथ में सांप बिक-लाने हैं! तू ही कोई आदुर है क्या?



आदुर नहीं! बुद्धधर्म से मत बनना! जिसके करीर में लगे हैं सांप! असंख्य सांप!

और मैं तुमसे सदा घटकर नहीं सिर्फ यह जलना चाहता हूँ कि अंध जड़ों की तरह तुम अपने दर्शकों को भुलाने के बजाय डराने वाले बनो क्यों दिनेश?

और जब उसने मुझ की बीच में ही छेड़कर जलाया तो तुमको आकांक्षे भयलक जीव बना रोकने की कोशिश क्यों की?



तू तो मेरा ही देव नहीं रहा था! मुझे अच्छी तरह से याद है कि मेरे दर्शकों में तू तो कभी भी नहीं था! फिर तुम क्या लक्ष्य फेंक रहे? आदुर दिनेश भी अपना धर्म है क्या? मुझे खोस!

आदुर दिनेश! अपना धर्म ही! लेकिन लोगों को अंध बना देना ही अपना धर्म की भाँति मैं अंधा हूँ! अब क्या? मैं सा क्यों किया तुमने?



मैं तुमसे ज्यादा तेले के लिए बाध्य नहीं हूँ नाराज!

वैसे बहुत हो गया यह तेल!

अब मैं तुमसे दिखाता हूँ कि कणवली क्यों जीत रहा है!

मेरी 'अहमत्सोह' किरणों ने दर्शन को हरेका के लिए जड़ कर डेदी! सिर्फ मौत के बाद की अकड़न ही इस जड़ता को रक्त कर पाएगी!



अरे, तू... मुझे मेरी तस्सोह किरणों को अपने तस्सोह में मजदूर दिना! मैंने ही तस्सोह किरणों से तो मेरे मर्क जाल को मजदूर किया था! कभी तुमने ही तो नहीं... लड़ो! यह काम दर्शकों से ही किसी ने किया था! और मुझे याद है कि तुमदर्शकों में नहीं था! तब, तुमसे मुकबल सजेडर होता! और अब मेरा ब्रह्मजाल भी पूरा हो गया है! मेरी किरणों बढ़ने लगी हैं! अब देख अपनी जितनी का अखिरी सजारा!



ब्रह्मजाल पूरा हो गया? किरणों बढ़ रही हैं?

क्या अर्थ है कणवली की इन बातों का!

शक्ति ! इच्छाशक्ति ! वही मेरे  
शरीर में : शक्ति की मुक्ति !...

३७

# ERABE

आइए! कलका  
अर्थकर जाए!

स्वैर! कहीं  
मे ली प्राप्त हो रही हो।  
यह बाढ़ में सोचना!

अभी तो इस  
पर जल्दी से जल्दी काबू पाला  
ज्यादा जल्दी लड़ा है।

इसकी शक्ति यां बल  
रही है! कहीं से इसकी  
शक्ति प्राप्त हो रही है!  
पर कहां से ?

अह! यह  
क्या छोड़ा है तुमने  
मुझ पर ? मेरा  
सारा धन तो चला  
है !...

इसे विधुंकुंकार कहते हैं करणवक्ती! मैं  
तेरे बार का जवाब उतने ही कालिकाली  
बार में दे सकता हूँ...

... पर ली  
स्वातन्त्र्य की  
हिंसा में व्यक्ति  
नहीं करता।

अब मैं तेरी समझौदा करके  
को ही अपनी समझौदा  
करणा दान रखी दानगा :



...नहीं होने दूंगा!

आश्चर्य! अब... अब यह मुझे पर मानसिक शक्ति का वार कर रहा है! इसकी शक्तियाँ तो कड़ती जा रही हैं! पहले इसने सर्प-बंधनों को तोड़ डाला! फिर मुझे पर अतालवीय शक्ति से धर धर किया! और अब ये मानसिक वार! कहाँ से मिल रही हैं इसकी ये शक्तियाँ?



अकार करणवड़ी नगराज की शक्तियों से अपरिचित था, तो नगराज को भी करणवड़ी की शक्तियों का अभाव महसूस

मैं बेकार ही उस दूसरे शक्तियों को बंद रहा था, जिसमें भीषण समोहन शक्ति हैं! जब मैंने समझे हैं ही तो मुझे अला-तुल की अथा-ज-मरत है! जैसा मैंने मेरी समोहन शक्तियों तोड़ रहा था, वैसे ही मैं भी मेरी समोहन शक्ति खींच सकता हूँ!



और यह काम मैं तेरा निर-चकराज स्वतंत्र होने से पहले ही कर लूँगा, भक्ति मेरा प्रतिरोध कर ही न पाए!





और अपनी बवली हुई शक्तियों के साथ  
करणवशी नाराज के शक्तिष्क में बनी  
हुई उसकी समोहल शक्ति खींचता था  
रहा था-

हाहाहा! समोहल शक्ति  
लाल तो रही है, पर धोड़ी ली।  
इसके दिमाग के अंतर्गत  
तक धूल लगी होगी, ताकि  
मैं जल्दी-जल्दी इसकी  
शक्ति सोख सकूँ!



वरना अगर कहीं  
इसने अपने-आपकी संग्राल लिया,  
तो फिर मेरी रवैर वहीं!

करणवशी नाराज के  
शक्तिष्क के अन्दर,  
समोहल शक्ति का केन्द्र  
दुंदले के लिए धुमना बना रहा-

तू बहुत शक्तिशाली है नाराज!  
पर अगर मैं तेरी शक्तियों को  
ल कर सका तो उसके साथ तुझको  
औं जिया नहीं रहने दूँगा!

क्योंकि एक ही स्थान में दो  
तलवारें नहीं रह सकती। एक  
ही चुटकी पर तलवार समोहल  
शक्ति वाले दो मालव नहीं  
रह सकते!



तुमको मारने की मेरी  
कांछिओं झावद लाकल रहें।  
पर मैं ऐसा झलजल करके  
जा रहा हूँ...

...कि तेरी मौत  
का कारण वहीं बनें, जिसको  
बचाते के लिए तू मुझे से  
टकराया था।

और उसकी अपनी खोज  
सकल संसार कर देती थी-

एक चीज के साथ

आइसह: हा... यह क्या?  
मुझे एक बहुत तेज  
शक्ति का लाला है, मेरे दिमाग  
की कोशिकाएं पूरी तरह  
से धर धराने लगी हैं। कोई  
शक्ति इसके शक्तिष्क  
के अन्दर बैठी, इसके  
शक्तिष्क की सुरक्षा कर  
रही है। मुझे यह खोज  
रोकती होगी, वरना मैं  
पलान हो जाऊंगा।



करणवशी वर उसल नाराज की बुद्धि-  
धारी शक्ति के उस केन्द्र को घेर बैठा था, जो  
उसकी समोहल शक्ति के केन्द्र की भी रक्षा करता

★

आइसह:  
करणवशी नाराज  
हैं; पर नाराज-नाराज  
वह मुझ पर एक  
किरण धीका जा रहा  
है; क्या असर हो सक  
है इस किरण का?



असर जी भी हो! किलहान तो  
वह असर रोकने की स्थिति में हूँ,  
जहाँ ही करणवशी का पीछा करने  
स्थिति में! क्योंकि इसके मानसिक कारणों  
कारण मेरा फिर अभी भी घुम रहा है! लेकिन  
मनवशी बचकर जा सका कहीं? महाबल  
उसके आस-पास के इलाकों में फैले  
जामूस सर्प उसकी दृढ़ ही निकालेंगे!  
अभी उसको करणवशी को दृढ़ निकालने  
का आदेश भेज देता हूँ!

महाबल ने कैसे जामूस सर्पों तक महाबल का आदेश पहुंचा दिया-



व, इस वक्त मैं कुछ नहीं कर सकता! मुझे  
सूने सर्पों के संकेतों को ध्यान रखना  
ना! और मसल का सुपटा में अजामूसों  
'बचने' के लिए कर सकता हूँ, जो करणवशी से  
इसे के कारण भगदड़ में गिरकर या तो कुचल  
रहे हैं, या चीट रहा रहे हैं!



ऑडिटोरियम के मुख्य द्वार और उसके आस-  
पास भारी जल नाला था। हर कोई दूसरे को  
पीछे हटाकर पहले बाहर निकलना चाहता था-

ओह! मैं तो क्षत के रूप में  
आराम में बाहर आ गया,  
परन्तु अभी कई दर्जों के  
अन्दर ही हैं!...

... और वालकल मैं बैठे दर्जों की  
बीचे उतरने का रास्ता झगड़ जाऊँ सिवा  
तो उनसे मैं कई दर्जों के कुद-कुद कर ही  
अपनी जान बचाने की कोशिश कर रहा हूँ!



ओह! वह बच्चा  
ऑडिय के गलियारे में  
कुद गया है! यह  
उतनी ऊँचाई से  
गिरकर मर सकता  
है! मुझे सबसे पहले इसे ही बचाना है!

महाराज के इस काम को ऑडिटीरियम से बाहर  
अभी मैं कहूँ। आँखों के साथ-साथ अब इसकी  
आँखों ने भी देखा जो अब तक ऑडिटीरियम के  
बाहर जमा हो गई थी -

मेरे महाराज  
लगा रहा है।

महाराज जैसा  
लगा रहा है।

आँखें खलबल हैं क्या  
तैरी ? यह तुम्हें महाराज  
जैसा लगा रहा है ?

यह तो कोई गलत है। कोई  
औतार ! जिसने महाराज का  
रूप धारण किया हुआ है !  
और यह उस वरुण की  
मारने जा रहा है।

हम अपनी जल बचाने  
के लिए तो मारा सकते हैं,  
पर किसी बच्चे की जान को  
खतरे में धोकर नहीं !



वारा इन्से!  
मारी!

पुलिस को फोन  
करता हूँ।

तब तक मैं  
इसको रोकता हूँ। मैं  
पास लड़ना ही चाहता  
हूँ।

यह भीड़ को अचानक उठा  
गाया? ये मुझे पर हमला क्यों  
कर रहे हैं? और ये मुझे पहचान भी  
नहीं कर रहे हैं। चक्कर क्यों है?

चक्कर कुछ भी हो सकते  
हैं। इनकी रोकना होगा, अन्यथा  
इनके हमले से मुझे तो  
कहीं फंका नहीं पड़ेगा। पर  
ये बच्चा घायल हो  
सकता है!



बच्चा आज ही मर रहा है। पर  
ये लोग हम पर हमला क्यों  
कर रहे हैं? और ये मुझे पहचान  
भी नहीं कर रहे हैं। चक्कर क्यों है?

अब तो समस्या का हल नहीं है!  
तब बच्चा इसके हाथों में बच  
पाया है तो यह दूसरे बच्चों पर  
हमला करेगा! इसकी रोकना  
ही समस्या का अंश होगा। वरना  
यह हमारे बच्चों की जान  
खलेगा!



बच्चा, तब कुछ कर पाएगा  
पर मैं अभी इसके पीछे में सारी  
जो सारी जोनियां बांध देता हूँ।

नगराज के हाथों में निकलकर सर्व-सेवा भीड़ की तरफ उड़  
चली-

मैंने सर्व भीड़ पर हमला तो नहीं  
कराया, लेकिन इनकी उपस्थिति  
ही भीड़ को तितर-बितर करने  
के लिए पर्याप्त रहेगी!



सा...मुझे बंधू  
की जगह जान।  
सा...मुझे तस्ली  
के पास जान  
है!

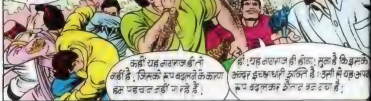
अब ये मुझे पर भीड़ियों से  
हमला कर रहे हैं। साथ ही साथ  
पथराव भी तोज हो गया है। यह  
भीड़ अविचलित ही नहीं है!

इससे पहले कि ये  
सर्वजनिक मैपनि को  
लक्ष्य बना लें, मुझे  
इसकी रोकना होगा!  
हाल्की विष फुकार यह  
कारण कर सकती है।  
इसमें ये लोग सिर्फ  
बेहोश हो जाएंगे, पर  
जान का खतरा नहीं  
होगा!



नाराज की विप-फुंकार ने सचमुच तड़ालक मचा दिया-

ओ...ओ...ओ...  
य...यह तो नाराज की  
तड़ह ही विप-फुंकार ही  
छेड़ रहा है।



कहीं यह नाराज ही तो  
नहीं है, जिसकी रूप बदलने के कारण  
हमें पहचान नहीं जा रहे हैं।

ही! यह नाराज ही होना! मुझे है कि इसकी  
अंदर इच्छा थी किजि है। उसी से यह अपर  
रूप बदलकर डैलाट बन गया है।

नाराज डैलाट बन गया है!  
हल पर अचानक जीव और विप  
फुंकार झोड़कर बलकी जगह  
की कीजिज कर रहा है।

सैसी बाने जब फैलती  
दुःख होती है-



तो पूरे अंदर में अंगल की आवा की तरह फैलती है-

कॉट डेलनेस! क्या  
सकलन कर रहे हो  
यह नाराज बन जाऊंगा,  
पर डैलाटो जैसी कल  
करी नहीं करेगा।



वह सैसी ही कल कर रहा है डैलाट  
युकील न हो-ओ अप! आगनी न्युल  
पैलेज! पर मलीव प्रमाण देरव  
लीजिए! निहा बहा पर पहुंच-  
कर न्युल कर कर रही है।



कल हुआ आगनी? सैसी आगनी कागल  
यह नाराज के  
डैलाट बनने की  
कल बात ही नहीं  
ही?

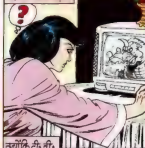


इसके लीवें पर लेना मतमोहक कर दिया है  
के वे नागराज को मतमोह रूप में देखने के  
अजय एक दोस्त के रूप में देख रहे हैं। नौर यह  
है तो अभी सावित हुई जाती है। क्योंकि जहाँ  
एक मुझे पता है किसी टी.वी. कैमरे को  
मसौदित नहीं किया जा सकता है।

मुझे विश्वास है कि  
टी.वी. मस्तिष्क मस्तिष्क  
अपने मतमोह रूप में  
ही नजर आसगा।



भारती ने टी.वी. पर 'आली न्यूज चैनल' को  
सेट किया, और उसकी आंखें अचर्य में  
फिरती चली गईं -



क्योंकि टी.वी.  
पर नागराज का जी रूप फिर रहा था -

वह उसकी मतमोह रूप तो कतई नहीं था -



रुक जाओ, नागराज, और  
अपने-अपकी ससारे हवाले कर दो।  
वर्त लेने स्पेड्स, 'मैटी वेल्ड जेम्स',  
मुल्हारी जल लेने को मजबूर हो  
जाम हो।

नागराज ? क्या तुम मुझे  
महंदाज नहीं रहे हो र. सी.  
पी. विष्णु ? मैं नागराज हूँ !

अब तुम नाराज से एक गुरु बन  
गम हो। तुम्हारे अंदर छिपा जौतन आज  
बाहर निकल आया है। वहाँ इच्छा धरी  
शक्ति का प्रयोग करके न तुम वै अर्धरूप  
रूप धारण करने, और नहीं तोले-भले  
नगरियों पर अपनी नाराज शक्तियों  
से हमला करने!



और अगर ऐसा है तो मुझे इस  
झींझ में अपना असली चेहरा ही  
दिखाओ क्योंकि इस पुलिस का  
कोई भी समझौता नगराज को  
समर्पित नहीं कर...अरे!



य... यह क्या? मुझे  
अपने चेहरे के स्थान पर  
किसी अर्धरूप मांस का  
चेहरा दिख रहा है। यह  
कैसे हो सकता है? यानी  
यह समझ बन नहीं है!

यकीन नहीं आता तो देखो  
अपना वह अर्धरूप चेहरा,  
जो जौतन के दिल को  
भी डिला दे।



संभल जाओ नगराज! मेरे  
वही पुराने दोस्त बन जाओ  
जो अपराधियों को रबु-बबु  
मेरे लोक अपतक आने  
को मजबूर कर देता था!

विष्णु क्या बके जा रहा  
है? क्या हुआ है मेरे चेहरे को? कहीं यह  
करणवड़ी के अंतिम किरणवार का असर तो  
नहीं है!

करणवड़ी की धमकी श्रोतवारी में अपने आपको पुलिस के  
नहीं थी। वह मध्यम सेना द्वारा  
जस करके गया है कि मेरी मुखा  
में रहने वाले ही मेरी जान लें।  
ले। पर मैं इस षडयंत्र को  
सफल होने नहीं दे सकता!



वर्ता लड़ाव की  
जलता से ही ही जान  
ले लेगी!

और करणवड़ी  
की रोकने वाला कोई नहीं  
रहेगा! मैं जले क्या करना चाहता है



सर! आतंकी आतंकी की की शिका कर रहा है।

अगर यह अपराधी नहीं होता तो आतंकी की की शिका कभी न करता। पहले अपना का हडमना करे!



आतंकी ही यस एक रॉकेट आतंकी की तरफ लपक पड़ा- वैसा तो ये मुझे लगता नहीं। पर ये ओह! ये मुझे पर रॉकेट आतंकी मुझे लगता भी जग तो कोई खास कर रहे हैं! अगर नहीं होगा!



क्योंकि आतंकी से थोड़े ही फासले पर वह रॉकेट फट गया-

आओह! इस रॉकेट से बिस्फोटक नहीं, धार और उसमें से कई तेज धार हथियार निकल सकते हैं। यानी इस फंटीवरन स्वभाव को नेदी इन्जिनरों की ध्यान से तबकर बनाया गया है।



इन्जिनरों ने सोच ही इसीलिए बनाया था कि मेरी बिस्फोटक इतना पर आतंकी न करे। लेकिन मेरे पास और भी इन्जिनरों हैं। देखना है कि ये उनका मुकाम कैसे करते हैं!

जैसे आतंकी!

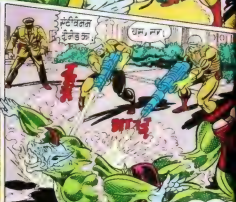


तब रातसी सिर्फ एक पल के लिए सिपाहियों को बांध सकी-

ओह! इनकी बुनेट प्रकृति कैसी  
में धातु के तार लगे हैं! और  
इनकी पांजरी में बाइड सेली  
बैटरिया भी लगी हैं, जो उन लोगों  
में कोई डंडा नहीं! मेरी सारी  
रातसी जल्द इसी कार्ट के  
कारण दुबली जा रही है!



लवना है तब रातसी सुका-  
बला करने पर उत्तर है! तब रातसी पहला कार  
विकल हो गया! लेकिन तब रातसी पर  
बार-बार बुला कर तब रातसी के हमलों  
के कारण इनकी उत्तम सिपटने की जो  
तैयारी करी थी वह आज तब रातसी के वि-  
नाश के कारण अस्थिर! दूसरे धरणा  
का बार करो!



यह 'स्टेडिस्ट' आतंकी जल्द  
आतंकी, जल्द  
आतंकी नहीं कि  
आतंकी वेदम  
का पाल-

मेरी फुकर  
करी इनका मुका  
कर देगी!

ओह! यह 'स्टेडिस्ट'  
वजह से जल्द पुलिस वाले  
ने डॉक्टर के पास जाने की सलाह  
ली होगी! ऐसी स्थिति में 'स्टेडिस्ट'  
बैम सिर्फ वे ही बना सकते हैं!

कब तक फुंकारेंगे और आगाराज ?  
हम भी लड़ेंगे सोडों से हैंडों, और तुम फुंकार  
सोडोंकर अजब विष कम करते हैंडों, और  
थोड़ी ही देर में तुम इनसे कमजोर हो  
जाओगे कि हम तुमको पिटाई में  
बन्द कर लें !

विष्णु की कहना है। वयाव  
कहे हैं कि अथ मय  
और अग्नि ही अथ कहे  
मुझे मय भी हल करल हल  
कि वह हल मय हल  
यहि जितने हल नुकमान  
है। और मय मय मय के  
लिख मुझे अथ यहि अथ  
मरी कहे हैं अग्नि हल  
नुकमान पय चामबी की  
पय चामबी।

कितना डर था कि मैं  
उदालकर अदृश्य हो जाऊँ।  
तक मैं कोई तरीका खोज  
ने लगे।

नमः, ललितम् अद्वयम्  
हो रक्षा है :

अंक: ये तो हर बार तुझसे  
नक कदल आते निकल जा रहे हैं।  
तुम्हें यही वाद से दक जले के वाद  
में अपने इच्छाधारी क्यों की  
वैस की तरह हवा में बिखरे रहें।  
नकक: तुम्हें अपने अपनी  
बद में आवाही पड़े।

हल इसके लिए भी तैयार हैं। हमने पहले कि ये पूरी तरह से अदृश्य हो जाए, उनका

बुद्ध: महा राज इस वदनमूक निर्धैतिक लोभ को अपने आप कभी छोड़ा नहीं पाया। अब इस म आदम ने भी पाँच जल झुंके कलशों में धर करके और अब ये बेनुद्ध हो जान, लख इसकी अगले कलशों में ले आ।

सब कि ये सोचें  
बदलना है, बिना  
पर इसके सुझावों  
के और भी तरीकें

हैं अपनी कलाई पर  
मैथिली की हटाकर  
अपनी सर्पिल के ताल  
लिकलने लायक  
प्राप्त कर सकते हैं।



मुझे करपावड़ी का पता जल्दी से जल्दी  
मिलना होगा ! और इसके लिए अब मुझे  
अपने सपनों के साथ-साथ अपनी कसूर निकालने  
की भी मदद लेनी होगी ! जिसके रिपोर्टर  
महानगर के हर कोने में मौजूद हैं !

मक जाओ नगराज !  
मेरे सिपाही बेहोश हो गए  
तो क्या, मैं तो अभी होश  
में हूँ ! मैं तुमकी अगले  
नहीं दूंगा !



आइस ह ! यह जरूर  
स्टेडी पैरजल' इजैकशन  
होना !  
मौरी विष्णु ! तुम पर  
वार करके मुझे  
कोई लुट्टी नहीं भिजी,  
परन्तु मुझे रोककर  
तुम करपावड़ी की  
मदद कर रहे हो !  
और अपना  
लुकसान !



और मैं तुम्हारा लुकसान  
कभी नहीं होने दे सकता !



न्यूज चैनल पर लगातार नजर सुझान  
हूँ भारती भी सोच में पड़ गई -

क्या सिद्धा का कहना सच है ?  
नागराज क्या सचमुच नगराज  
बन गया है ? क्योंकि अगर वह  
सुसोहन का असर होता तो टी.वी.  
के नगराज का असली रूप  
ही दिखाता ! अब इस समस्या  
में मैं कैसे निपटूँ ? ओह ! फोन !  
यह किसका फोन हो सकता  
है ? नागराज का ?



जैसा कि आप देख रहे हैं नागराज  
अपने पुराने दोस्तों तक पर धार करले  
में नहीं हिचक रहा है ! क्या सचमुच  
नागराज राक्षस बन गया है ?

पर ये फोन नागराज  
का नहीं था -  
फोन करने  
वाले थे -  
डॉक्टर कमलाकरण ! हाँ  
मैं भारती ! अच्छा ! उसने  
भी वह सजीव प्रमाण  
देख लिया ? आपकी  
क्या राय है ?



महात्मा बहुत सीरियस है भारती ! मैं  
साँपों के बारे में तो काफी कुछ जानता हूँ !  
पर नाराज वास्तव में एक जानवर है, जिसमें  
नाराज में बहुत सकेने की इच्छा होती है !  
इसलिए उसको क्या हुआ है, यह तो उसके  
पूरे चेकअप के बाद ही कहा जा सकता है !  
पर चेकअप के लिए उसको एक डॉक्टर चाहिए  
है ! और यह काम अंततः नतीजों मुझिल  
तो है ही... वैसे फिलहाल तो मैंने तुम्हें  
सतर्क करने के लिए फोन किया है !



अगर नाराज अपने पुराने मित्र सी. पी.  
विष्णु पर हमला कर सकता है तो मुझे  
पर भी कर सकता है ! और तुम्हारी  
और तो कुछ जान-पहचान है न  
उसने ?



मैं सतर्क रहूँगी ! ह... हाँ जी ! अपने  
'विप-असुर' का महानगर पर हमला  
होने के बाद जो हाथियार बगकर मुझे  
'न्यूज चैनल' पर दिखाते के लिए  
दिया था, वह मेरे पास है ! जी हाँ !  
मैं जानती हूँ कि वह नाराज पर भी  
असरदार होगा ! ★

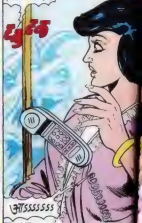


गुड ! तो अगर नाराज तुम्हारे  
सामने पड़ जाए तो उस पर कब  
पुनर् की कोशिश करेगा ! तब  
मैं उसे यहाँ पर लाकर उसका  
चेकअप कर सकूँ, और उसकी  
समस्या समझ सकूँ ! ओं के  
बाय !

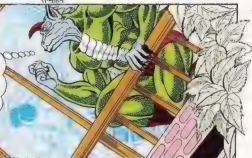


बाय, डॉक्टर कल्याण !

भारती ! इसका  
खोली ! जल्दी !



अरे! यह भारती की क्या हो गया ?  
भायद यह भी तोरे अवाक रूप से धर  
ई है ! या... या तुमने पहचान ही नहीं  
ही है ! स्वेर, इसकी तो मैं समझा लूँगा,  
य यही पर ज्यादा देर रुका रहना स्वतन्त्र  
नै सकता है, अगर किसी ने तुम्हें यहाँ खड़े  
नव लिया तो उवा भीड़ भायद इस घर पर ही  
मसला कर दे ! अगर दरवाजा नहीं खुलता  
तो तुम्हें दरवाजा तोड़कर अन्दर  
जाता होगा !



वैसे भी विष्णु द्वारा सारे हम  
'संटीवेनस डीज' को ले  
तुम्हें थोड़ा कमजोर कर दिया  
है ! तुम्हें बुनकी शक्ति नहीं  
बची है कि मैं खड़े-खड़े  
दरवाजा खुलने का इन्त-  
जार करूँ !

दरवाजा खुला किता जाने वाला हर कार्य, एक लई हालत फहमी पैदा कर रहा था—

सुनो ! दावी तुम सचमुच  
मिलन बन गए हो नवराज !  
अब ऐसा नहीं होता तो तुम  
अनार्यकों की तरह भीड़ा  
बिड़कर अन्दर आने की  
केंडी नही करते !

यह तुम क्या कह रही हो भारती ?  
मैं तोलन नहीं बना हूँ ! यह  
करणावकी की किसी समझदर  
किरण का असर है !



मैं भी तुम्हारी बातों  
समझकर करना चाहती हूँ  
दरवाजा ! पर क्या करूँ...

... सरे मध्य तुम्हारे  
बिनाफ हैं ! मैं तुम्हारा  
यकीन नहीं कर सकती !

यह क्या कह रही हो भारती ?  
तुम्हें तुम्हारी सवद की जरूरत  
है ! यह सब करणावकी का किता  
धर है ! और इसकी काट आजने  
के लिए मैं उसे दूँदा बहुत  
अकूरी है ! उसका दूँदने से  
तुम्हें भारती कम्पुलिकेशन  
की सवद धारिण !

नहीं नवराज ! अगर यह  
समझदर होता तो टीवी कैसरे  
पर तुम्हारी अमली अमली  
बेगुनाह जलत की भीड़ पर तुम  
अदली नवदकिताओं का प्रयोग  
करते ! और विष्णु जैसे पुराने  
दोस्त पर हमला भी न  
करते !



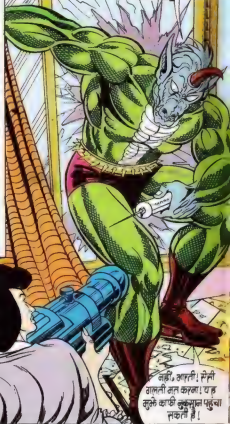
मेरी इकल कैने बदल गई, यह मैं भी नहीं जानता भरती! ऑडियो रियस के बाहर की लीड मुझे वेचकर उठा ही रही थी और सर्व-जलिक तैपनि को नुकसान पहुंचा रही थी! इसी-लिये उनको लिफ-बितर करने के लिये मुझे नगर-जियों का प्रयोग करना पड़ा! और विष्णु मुझे पर 'स्टेडीवेजस ड्रिजेकटल' का जर कर रहा था! पर मुझे करणवर्दी को खोजने जाना था! इसी लिये मैंने उन पर वार किया! पर वह वार घातक कतई नहीं था!...



वा तो तुम बीमार ही नगराज! या सचमुच तुम्हारे अन्दर का झेतन बाहर आ गया है!... पतालवाले का स्फुट ही तरीका है! तुमको काबू में करके तुम्हारा चेकअप करना!... और यह 'स्टेडी वॉयजस गान' तुमको आराम से काबू में कर सकती है!

... करणवर्दी को खोजने में मेरी मदद करो भरती!... आह!...

... इस ड्रिजेकल का 'स्टेडीवेजस' अभी भी मुझे कलजोर कर रहा है! मेरा यकीन करो भरती!



नहीं, भरती! येनी गालती मत करना! यह मुझे काफी नुकसान पहुंचा सकती है!

अब तुमको सुनाऊँगी पहंचासंगी  
माराज। बल्कि तुमको डॉक्टर कल्याण  
अभिलेख से पहंचासंगी। जहाँ पर  
डॉक्टर कल्याण तुमको ठीक  
करने का तरीका बूँदों में।

भारती की केशमी द्वार पर बबलई, और  
माराज के लिए सहायक विपलदाक  
की धार माराज की तरफ लपक गई-

ओह! डूधर-उधर बटने की जगह नहीं  
है! मुझे डूधर धर्म कर्णों में बटलना होना  
पर मैं अपने दिमाग को कैमिनि  
ही नहीं कर पा रहा हूँ!



स... मुझे  
इस धार में बचल  
ही होगा!

वर्तमान में ही 'स्टीविन' से कजौर  
हुआ मेरा शरीर, इस विपलदाक की धार  
की केल नहीं पासल!

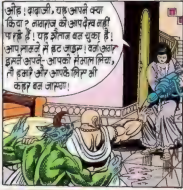
कित इससे पहले कि धार  
माराज के शरीर को छू पाली-

स्व अवरोधरान्त में आ लड़ा  
हुआ-



भारती की जिन्दगी में पहली बार  
दाजी का धपड़ पड़ा था-

होश में आने  
भारती!



ओह! दावाजी, यह अपने क्या  
किया? माराज को आप देव नहीं  
पा रहे हैं! यह झौला बल चुका है!  
आप लाकड़े में बट जाइस। वर्तमान  
इसमें अपने-आपको संभाल लिया,  
तो इससे और आपके लिए भी  
कहल बन जायगा!



धु  
दक



यह सत सुनी कि नागराज कौन है, और तुम कौन हो। नागराज उस राजसी वंश की आखिरी सिपाही है, जिसकी सुरक्षा की कुछ जितनेदारी वेदाचार्य और उनके वंश पर भी है। और मेरा वंश बड़बूतों का नहीं, स्वामिशक्तों का है। जो अपने स्वामी पर खुद हथियार उठाने के बजाय, अपने आपको उस हथियार के तलने कर देते हैं, जो हमारे स्वामी पर उठता है।

नागराज पर हमला करने से पहले तुमको वेदाचार्य की लाश पर से गुजरना होगा। और ध्यान रखना, अपने स्वामी की रक्षा के लिए वेदाचार्य तुम्हारी लाश गिराने से भी नहीं हिचकता!

यह क्या कह रहे हैं, बाबाजी मेला तो मैं कभी तो घसीं नहीं सका मैं तो नागराज की मदद ही कर रही हूँ। शिवा चेकअप के इनके रूप बदलने का पता नहीं चला सकता है। अगर आप इस का बदला रूप देख पाते तो...

मैं जो देव पर रहा हूँ, वह तुम नहीं देख पा रही भारत!...

...मैं नागराज के रूप को अपनी आत्म तंत्रों के जरिए देख पा रहा हूँ। और नागराज का रूप तो मुझे समझ ही दिख रहा है। यानी तुमको वृष्टि-शून्य हो रहा है।

स... मैं ठीक हूँ फिर सबके साथ-साथ मुलाक़ा भी अपना रूप गायन जैसा दिख रहा है?

तुम्हारे शरीर के चारों तरफ मैं तन्मोहन किरणों का एक घेरा तन्मोहन का रहा हूँ नागराज। ये तन्मोहन किरणें हैं बाकी सबके साथ-साथ तुमको भी अपना रूप अत्यंत बलाकर दिख रही है।

हां, मुझे अभी तक मैं अपना प्रतिबिम्ब झौतली ही मजरा आ रहा था!

पर बाबाजी, तन्मोहन झलकी या पशुओं की आंखों पर ही अमर कर रहे हैं। कैमरे की आंख पर नहीं। फिर टीवी की पूरा नागराज झौतल और क्यों मजरा आ रहा

ह घेरा अर्थात् तीव्र सम्बोधन किण्वों का है। इसीलिए यह प्रतिविम्ब की भी उसी रूप में दिखता रहा है। और रहा टी.वी. के लिये द्वारा यह भी अथवा रूप विस्तारों का कारण तो यहां तक मेरी जानकारी है, टी.वी. कैमरा दृश्य और ध्वनि को चुंबकीय तरंगों में बदल कर उनकी प्रेषित करता है। ये सम्बोधन किण्वे नितीव्र होने के कारण यह गुणगुणवती डीडी के सम्बोधन ऊर्जा को भी चुंबकीय ऊर्जा में बदलकर, सम्बोधित दृश्य को ही प्रेषित कर दे।



ओह, ससका! पर कणवड़ी के पास इतना अधिक तीव्र सम्बोधन क्या कहा है ?

ये सम्बोधन घेरा किसी और की नहीं बल्कि तुम्हारी ही सम्बोधन तरंगों द्वारा बना है नागराज। ये तुम्हारी ही सम्बोधन तरंगों हैं।



तुम्हारे सम्बोधन के बराबर का कोई अन्य सम्बोधन ही इस सम्बोधन घेरे को लपट कर सकता है नागराज।

क्या ? ओह, घाटी कणवड़ी ने जो मेरी धोड़ी से सम्बोधन इकट्ठा तो सीधी उसने उसी का धार में ऊपर कर दिया। पर इस आनंद को कैसे काटा जा सकता है दादाजी ?



ओह! इसके लिये तो मुझे सारा सा कालदूत की शरण में जाना हीना !

मैं मानवता को बचाने के चक्कर में बहकवाड़ दी दादाजी। मुझे माफ कर दीजिए।



साफी मुझसे नहीं नागराज में मांगो भारती !



अगर स्वामी मानवता के विनाश पर उत्ताप हो जायें तो उसके अनुचरों को भी ऐसे स्वामी की स्वसिद्धि धोड़ने का पूरा अधिकार है। तुमने इस के कारण जो कुछ भी ससका, उसके अनुसार स्वयं वही काम किया। गुमना होता तो दूर मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। अब कम की बात मुझे। मुझे कणवड़ी को खोजने के लिये तुम्हारे रिपेर्टों की मदद की जरूरत है। ....



...क्योंकि मेरे जानून तब अब तक  
कणवड़ी का पता नहीं लगा पाया...  
अरे! मुझे मेरे एक सपके सवलेक  
संकल प्राप्त हो रहे हैं!...

बुद्ध! कायद अपने  
कणवड़ी का पता लगा  
लिपा है!



बुद्ध! तो पता नहीं भारती,  
लेकिन ये संकेत किसी अर्थक  
तकरी के बारे में जरूर हैं!

और किलबाल इस समय मुझसे  
मेरे सपके ही अर्थक स्वतः है! और  
वह है कणवड़ी!

मैं उसी तक 'स्टेडिअम'  
इसे अर्थक के अर्थ में पूरा  
तरीक उबर नहीं पाया हूँ!  
पर जाना तो पड़ेगा ही!



अब तक की बिसत तो तारे के  
के कविल जरूर थी-

पर उसका  
स्वतः इस बार गलत था-

स्वतः कणवड़ी नहीं था-

साफ करना आई पुलिस!  
अब पता होत कि आप इस  
सेनिकलिक रविवर में विना  
हैं, तो पहले बचा आपका  
अकार सवात और  
फिर खुदाई करना!



तब! आपकी तो तस्वीर किरण  
की एक झट्टी भी डोज में भी नई आज हमारी!  
आप पर मानसिक धार करके, आपका सिर तोड़ने  
में कर्ज स्वर्च नहीं करनी पड़ेगी!



हमारी मेनिहासिक धरोहरों पर  
पूरे देश की आंखें रहती हैं दुष्ट  
संप!...

...सिर्फ एक  
सिपाही की  
लडीं।

गंड! बैकग्राउंड  
में कौन बोला?



ओह! यहां तो बहुत पुलिस  
वाले तैनात हैं! और अडचन की बात  
यह है कि ये अपनी ब्यूटी भी कर रहे हैं!

कुछ घुस-घुस ले लो भाई! हाथ  
फिल्ली में तो तुम लीव सेना। मर गया  
ही करते हो SSSSSS



हम फिल्ली पुलिस  
वाले नहीं हैं संप! हम  
उम कमांडो फोर्स के हैं,  
जिनकी अलकावडी घस  
कियों के मधुवेनजर हम  
मेनिहासिक धरोहरों  
पर तैनात किया गया  
है!



मर गया! पर ये था कौन?  
हमको फिल्ली कुछ मर था!  
पर खुद फिल्म के सेट से  
भगदड़ हुआ तब तक है

इसका मेक-अप उत्तर  
कर देवते हैं! आओ!



इज्जत तो उत्तर दी गव की,  
अब और क्या उत्तरोगे? कस  
से कस मरने से पड़ने में एक  
घुंट जहर तो पिला दी!

य... यह तो जिन्द है!  
असंभव! गोलिएं तो इसके  
बदन के आ-पार हो गई  
थीं!

तभी तो मैं मरा नहीं!  
अब अंदर की रक्त तो  
आयद साँस खींचकर मर  
जाता!



खैर! मेरे पास ज्यादा  
बचत नहीं है!...

पथरीं नेटकलकर  
निपाटियों की कुछ हाडियों  
का टूट जाना निश्चित था-

पर पथरीली दीवार और  
निपाटियों के बीच में-



अरे! अरे! अचभी तबाली  
शिलार चलने चलने यह  
हौर फिन्स कहां से बाहर  
हो गई! मो 555555  
बचाओ!

स्कमिनट, जल्दी! इसने  
अपने-अपको लहराज कहा,  
लहराज के बारे में तो मैंने  
सुना है! पर यह किसीने नहीं  
बताया कि उसका मुंह छोड़े  
जैसा है!



...वर्षा दो-चार डोंडालाज  
और मारना! फिलहाल तो  
रुकों पर सिर्फ अप ही लगे  
हैं, मारने के लिए!

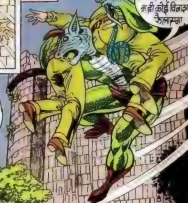
जल्दी दार तब लो,  
फिर मुझे खुद ही भी  
करनी है!



दोनों पुलिसवालों के अग्रीर हवा  
में लड़ते हुए पथरीली दीवार की तरफ लपके-

स्क चटपटी जिस  
आ गया-

लहराज के रहने  
में कोई मरेगा और  
नहीं कोई बिना  
कैला मरगा



मेरे मुंह की छोड़ी, और अपने चेहरे की चिन्ता करो! ... तुम तो मणिधारी और इच्छा धारी सांप हो! और जहाँ तक मैं जानता हूँ, तुम लोग हर जीवित प्राणी से डिपकर रहती हो! ... फिर तुम मातावहार जैसी घली मातव बनती हो आकर बिना डाक्यों फला रहे हो ?

साफ करवा, माता राज माह! अभी मैं जगजग्गी में हूँ। वैसे ही पना मेरी तुम मेरा यकीन करो या नहीं!



इतलिय नातु को अपना काम कर दो, और तुम अपना रसत देवो!

तुम्हारा दुहां पूरा आता भी रहस्यपूर्ण है, और तुम्हारा ये रेनिहामिक स्थल खोलता भी! तुम आविर दूंद क्या रहे हो? जब तक मुझे अपने स्थल का जवाब नहीं मिलता...

... तब तक तुम फिले के आलवा और कुछ नहीं करोगे!



आह! और दार सर है माता राज!

मैंने तुम्हारी इच्छियों के बारे में सुना है ...

... पर तुम मेरी इच्छियों के बारे में नहीं जानते! सिर्फ इतना जान लो कि मणिधारी सर्प की इच्छियों के नाम से तुम्हारी दुनिया की कोई भी इच्छा वहर नहीं सकती!



तुम्हारा वार घातक तो जरूर है!  
पर तुमको यह जानकर कभी अफसोस  
होया कि तुम पर ऐसे वर आए  
नहीं करते!



ओ३३३! बदल का  
पेद अपने आप भर गया!  
ऐसा तो मैंने एक विदेशी  
फिल्म में देखा था।

क्या नाम था  
उसका? क्या  
नाम था...

-टर्मिनेटर 2! यात्री बिनाफक!  
तु हीक समझ नाबू! कम  
से कम तेरे लिए तो मैं  
वही हूँ!



ओ३३३! फैसला विष फुकार! मुझे तो मचलुप  
चक्कर आ गया! वही तेज मझक है वनकी  
तुम या तो कोल्होट टोलन से दिन में दस  
बार ब्रुका किया करो नागराज! और या  
फिर तो 'पंचाम पीकेट' क्लेरेट रखा  
करो! अगर सणि मेरी सुरक्षा न करती  
होती तो तुम्हारी मांस की बढबू  
तो मुझे सोर ही डालती!

मैं यह बढबू और मेल  
नहीं सकता, इसीलिए तब  
सांनसिक वार करना ही पड़ेगा!  
लाकि न तो नू फिर कभी मांस  
से पार, और न ही ये घातक  
बढबू छोड़ पार!

ब्राह्म की सणि ने तब  
सांनसिक तब लिकलकर  
नगराज की बदल तब  
के लिए अबी लपकी-



और नाबू को धकित हो जाता पड़ा-  
कलाल है! तू मेरी सणि  
का सांनसिक वार मेल गया!  
और फिर भी तेरा सिर लही-मल  
मत है! पर... तेरा मुँह थोड़े से  
बदलकर इन्तानों जैसा क्यों  
हो रहा है?



मेरे सिर की रंग मेरी  
इच्छा धारी शक्ति करती  
है नाबू! और मेरी सणि  
अरे, क्या कहा? मेरी  
इच्छा इन्तानों जैसी  
हो रही है! यात्री...  
यात्री...

...मणि की तीव्र सनसिक तरंगों के कारण मेरे चेहरे के चारों तरफ घने, मेरे ससौंजन घेरे की लपट का दिया है। हो सकता है। यह संभव है। क्योंकि ससौंजन तरंगों की एक प्रकार की सनसिक तरंगों ही होती हैं। वादा वेदाचार्य की बात सत्य निकली!



अपने ही विचारों में डूबे नागराज की असावधानी ने—

लपट को पलटकर बंद करने का मौका दे दिया—



बहुत जल्द है रे तुममें नागराज! तुममें लड़ने में बड़ा लयब स्वर्य हो जाओगे रे ३३३ इनालिस किलहाल तू मेरे छोटे दुंढों से लड़!...

...ताकि उतलीदेर में मैं अपनी लुदाई का काम पूरा कर लूं!



मर्दपंरु सिन्धु

ओह!

इसकी मणि तो अचूक इन्धिया से मणि है। इसकी मणि की किरणों ने वायुमंडल में मौजूद धूल और गैस के कणों को जोड़-जोड़कर कई वातजनक प्राणी पैदा कर दिए हैं।

...और वे सब मुझे पर हजारा कर रहे हैं!



अगर ये मुझे काटने के बाद भी  
गाले नहीं, तो इन पर विष फेंका  
तो इन्हें या बेअसर साबित होगी!

क्योंकि ये जीवन  
प्राणी तो हैं नहीं!

अब देखना यह है कि इनकी  
आपत्ति में टक्कर कितनी अत-  
र साबित होती है!

दोनों 'धूल प्राणियों' की आपत्ति में हुई भीषण टक्कर ने फलतः ही दोनों प्राणियों को धूल में बदल दिया-

लेकिन उनकी आपत्ति जुड़ने  
में भी अन्तहीन समय लगा-



आह! ह!  
सारी मेहनत बेकार  
वाह! ये तो आपत्ति  
जुड़ गई! और...  
और अब ये मेरा वक्त  
घोंटने का प्रयास का  
रहे हैं!

इस क्षणिक से तो मैं इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके बच जाऊँगा, पर इनसे लड़ने और बचने के चक्कर में मैं नाश की इतनी ऐतिहासिक स्थल को क्षति पहुंचाने में रोक नहीं पाऊँगा! जबकि किमहात्म नाश की रोकना ज्यादा जरूरी है!



महात्म की यह चिंता अचानक ही पल दूर होती नजर आई-



अरे! यहां पर कौन आ गया मेरी मदद करने के लिए?

मैं आ गया हूँ महात्म! दरअसल मैं ईश्वरी माजिधारी सर्प की तलाश में महात्म आया था, ताकि मैं इसकी जखम-जखम बिना किसी फैलाने की योजना से सावधान कर सकूँ। इसके पीछे मेरी काफी दिनों में पड़ा हुआ था। और जो कुछ भी मैंने किया मैंने हुआ, वह सिर्फ इसलिए ताकि मैं अपनी शक्ति का प्रयोग करके यह देव सकुं कि मैं इस महात्मिक शक्तिधारी सर्प को लिपटने लायक हूँ ही या नहीं!...

.. मैं उस समोहन शक्तिवाले दर्शन से ही इंग्लिश दुंदुब वाहन था ताकि अपनी शक्तियों को इतना बढ़ा सकूँ कि इस सर्प की पापी योजनाएं ध्वस्त कर सकूँ!



पापी योजना तो मेरी है महात्म!...

पर बेमतलब बहुत! तुम ही महात्म हैं और महात्म ही! दोनों एक दूसरे के बाल का धकील तो कर रहे हैं। पर मैं अपना काम पूरा किया बगैर यहां से लौट जाऊँगा!

इन दोनों की बातों से वह समझ में नहीं आ रहा है कि कौन सही है कौन गलत। पर फिलहाल, जब तक कणवदारी और नद्य आपन में उलझे हुए हैं, तब तक मुझे इन धूल प्राणियों में बिखरने का सान्ना खोज लेना चाहिए।

पर सान्ना खोज तो तब, जब ये मुझसे जरा दूर होंगे। ये तो दूर हटाने ही मुझसे मेरे चिपक पड़ते हैं, जैसे ये लोहा हों और मैं चुम्बक।

और इसकी तुलना करने का सान्ना ही भी क्या सकता है। ये तो मानसिक ऊर्जा द्वारा जुड़ी धूल से बने प्राणी हैं!... इन पर तो... आह! मिल गया सान्ना!



मैं ही गलती कर रहा था। इनकी खल कावे का सान्ना इनकी दूर भगना नहीं बल्कि इनकी अपनी शरीर में और कसकर लिपटने देता है। और एक बार ये सब मेरे शरीर में लिपट जाएं...



... तो मैं 'ध्यान-यान' में इनकी मानसिक ऊर्जा को अपने मानसिक द्वारा सोव लूँगा!...



... और ये प्राणी धूल बन जायेंगे!... और मैं आजद हो जाऊँगा!...



... अब देखता हूँ कि कणवदारी और नद्य की 'रस्नाकड़ी' में कौन जीत रहा है!

इस समय कहीं जे फिलहाल  
नाबू का पलड़ा भागी था-

तुने मेरे नामले आकर बेवकुकी  
की है करणवली! अब तू ही मुझे  
बता सवा कि कहां पर बिच रहवा  
है तूने उनको! बता!



कभी नहीं  
वैने मीतू तुम्हें  
ज्यादा देर तक बांध  
कर रख नहीं पसक  
क्योंकि अब मेरे  
पास ही तेरी  
ठककर की  
अग्निवा है!

उनके इतने हाल का मौका तुम्हें नहीं  
झिंझका कर पवसी! क्योंकि मैं तेरी  
इच्छाअक्ति को ही सोच लूंगा। जब  
तेरे अन्दर बचने की इच्छा ही  
नहीं रहेगी, तब तू कर क्या  
करेगा?

अउउउह! स्वप्न में मैंना ही रहा  
है। मैं इस बांध से निकलने के  
लिए कुछ नहीं कर पा रहा हूँ। और  
यह बांध तूने जकड़ना जगहा  
है। मेरी इच्छाएँ तोड़ रहा है!



पर यह स्थिति ज्यादा  
देर तक नहीं रही-

हाप! मेरी मजि पर संप  
लियटकर इसकी किरणों को  
बाहर निकलने में रोक रहे  
हैं। यानी...



... नाराज बच  
गया। तुने-तुने धूल  
प्रणियों को कैसे  
सम्पन किया?



ठीक वैसा ही  
जैसे अब मैं तुम्हें  
काबू में कांढा।  
तेरी अक्लिया  
सोचकर!

तुम्हें इसकी  
'अग्निअक्ति'  
सोखने का प्रयास  
करना होगा! यही  
सकभव रास्ता  
है!



तु मेरी मणि पर हाथ लपेटकर इसकी शक्ति को रोकना चाहता है, नखराज! हाहाहा! देव, तेरे हाथों का मैं क्या हाल करता हूँ! मणि की उम्मा इसको पल भर में राख बनकर तब में उड़ा देगी!



और फिर मैं तुम दोनों की इच्छा-शक्ति खींचकर, तुमको इस लटक ही नहीं छोड़ूंगा कि तुम लोग मुझसे लड़ सको!



अच्छ! इसकी किरण मेरे चिन्ता पर एक मदद अमर फैला रही है! मेरी कद कर्म की इच्छा तूफान हो रही है!

इसकी तप मणि धीमे का प्रयास करने लायक! वरना यह जल्दी ही इसारी सारी इच्छा-शक्ति खींचकर इसकी बिना इच्छा-शक्ति वाला एक काया बनकर ही छोड़ेंगे!



मैं क्या कर सकता हूँ करणवली? यहां पर तो ऐसी शिपले की भी कोई जगह नजर नहीं आ रही, जहां पर इस मणि किरणों से बचा जा सके! जो कुछ भी मैं कर सकता हूँ, वह इस किरणों से बचने के बाद ही कर सकता हूँ!



पर इस किरणों की अपने तक पहुंचने से रोक कैसे? ओह! सूखी पत्तियों का ढेर!



जिनकी झाड़व यहां पर लफड़ करले वाले बकदवा करके छोड़वाना हैं! ये इसारी मदद कर सकते हैं!

नाखराज के हाथ दो पत्थर उठाकर उनको आपस में तेजी से गिराने लगे -



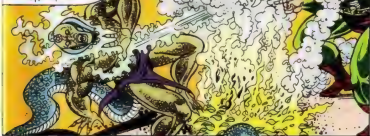
और उनसे फूटी चिंगारियों ने -

सूत्री पत्तियों के ढेर को सुझाकर, लबा तथा  
जबाराज स्वं करपावली के बीच में धुप की  
मक दीवार को लबा काल झुक कर दिया-



मेरी मणि किरणों, और किसी भी  
दूसरी बाधा को उसका कण तकती है नाश...

... लेकिन ये दीवार तो पहले ही भस्म  
की बली हुई है! अब मेरी मणि किरणों  
इस तक नहीं पहुंच सकती। और इससे  
पहले कि तु मणि-किरणों का दार  
बदल पाए...



असह्य!... मैं मणि की सुरक्षा में लेने  
के बावजूब अपने-आपको बेहोश होने  
में रोक नहीं पा रहा हूं! हालांकि मैं  
ज्यादा देर तक बेहोश नहीं रहूंगा, पर  
उतनी देर तक भी मणि की सुरक्षा करना  
अवश्यक है! और इस हालत में मैं  
निर्भर एक ही इन्कल पर भरोसा कर  
सकता हूं! तुम पर नाबाराज!

क्योंकि तुम इन्कल  
होने के साथ एक  
मादा भी हो! लबा  
का सिद्धांत मत  
तोड़ना नाबाराज!

मेरे होशों में आने तक इस मणि को अपनी आँखों से भी ज्यादा संभालकर रखना... वरना तब आने कितनी आँखें इसकी बलि चढ़ जाएंगी!



और! मरु का रूप बदल रहा है! यही इसकी अपना यह अंधेरे रूप मणि की शक्ति से बनाया था। कायदे अपने किसी भी दुश्मन को डराने के लिए! पर आँखों की बलि' से इसका क्या मतलब?

कायदा नवराज! तुमने महाभरत की तरह बहुत बड़े स्वार्थों से बचा लिया है! अब (लाओ) यह मणि मुझे दे दो! मैं इसकी सच्चे करने का तरीका जानता हूँ!



अब नारा इस मणि से महाभरत की सच्चे करना चाहता तो बहुत पड़ने कर लेता! और तुने मेरे हाथों में तो कभी नहीं देता! क्योंकि इस वक़्त मैं उसका प्रतिद्वन्द्वी था। बात कुछ और ही है! और वह बात नारा कुछ ही पलों बाद होशों में आने पर बताएगा!



मेरा सच खराब मत करो नवराज!

मणि मुझे दे दो!

और अगर अपने-आप तुम नहीं देना!

... तो कोपवद्वी अपने सच पूर्वक हमिल कर लेता!

**धृतराष्ट्र**



अब मुझे स्वार्थों में आया है कि तुम पर मणि की मणि! पर इस वक़्त मणि हमिल करने आया था!

मेरी मदद करो नहीं! पर इस वक़्त मणि मेरे हाथ में है!



... और यह मेरी सच निकलने की भी शक्ति वाली सच निकलने की भी बचल सकती है!

अब मैं तुम्हें भाले नहीं दूँगा!

तुम सच!

अब मैं यहाँ पर लटककर अपनी उस शक्ति को बहाद नहीं करूँगा, जो मैंने लड़ी मेहनत से इकट्ठी की है। मुझे अपनी योजना पर अमल शुरू करने के लिए छोड़ी ली और सार्वजनिक शक्ति की जरूरत है, जो मुझे इस सगि से मिल जाती!

पर कोई बात नहीं, मैं उस शक्ति को एक दूसरी जगह से प्राप्त कर लूँगा! और उसके बाद तु देवेवरा करणवशी की योजना: इस दुनिया के साथ-साथ मेरा गुलाब बनकर!



ओह! यह अपनी सज्जन तरंगों के सहारे उड़ सकता है! मैं इसका पीछा नहीं कर सकता। पर इतनी भीषण शक्तियाँ इसमें आई कहाँ से?



ये तुम्हारे महात्मा के शिष्यों की वह सहस्रसंख्यक शक्ति है महाराज, जिसे करणवशी धीरे-धीरे करके चूस रहा है!

और तुम हीन में आत्म नाश! पर करणवशी महात्मा की उल्लास की इच्छा शक्ति कैसे चूस सकता है?



ऐसी शक्तियों के सहारे! जिसको उनसे मेरे परिवार के अन्य शिष्या भी चुराते हैं, इसलिए जो इस वक्त महात्मा के पाँच कोने में धरती के नीचे दबी हुई है!



मैं उस शक्तियों की वृद्धि के लिए ही खुश हो रहा था! परन्तु यहाँ पर कोई शक्ति नहीं है! अब वे शक्तियाँ कहाँ दबी हैं, उनकी लब्धि स्थिति को करणवशी के असाव और कोई नहीं जानता!

मुझे पूरी बात गुलाब से बताओ नाबू! कल वही कील है, और उसका तुम शिष्या ही नाबू से संपर्क कैसे हुआ?





मेरी ही बालती से जागराऊ। वह असल मुझे  
किसमें देवदे के बहुत झोक है। और ये मत  
रुके उस मित्रावरिणी से लगी, जो हमारे जंगल  
के अदिवासी कबीलों की घोंटे प्रोजेक्टर पर किसी  
दिव्यले जंगल में आया करते थे। धीरे-धीरे मैं अपने  
परिवार से छिपकर झुंडजले लगा। अपनी सपनी सपना  
से इसकी रूप धारण करके किसी देवदे के लिए  
छिपकर इन लिए क्योंकि इसी जंगल में किसी भी  
जीवन प्राणी से दूर रहने की सफल विद्या है।



आयव वहीं पर झुंड में कणवड़ी की जंगल  
मक पर फकी होनी। उसकी पारसी नज्मों  
में मुझे तुम्हें पहचान लिया। और मेरा  
पीडा करने करने वह हमारे विवास स्थान  
तक आ गया। कणवड़ी की तंत्र-मंत्र की भी  
अच्छी जानकारी है। हमारे निवास स्थान के  
पाल आकर उसने अपने-आपको स्वयं ही  
बुरी तरह से घायल कर लिया, और वहां  
फंसी ठाव-



हमारे परिवार के वयासु नपों ने उसको  
देख और बैस ही हुआ जैसा कण-  
वड़ी ने सोचा था। वे उसको उठाकर घर  
ले आए, और सभी किशोरों से उसकी  
चिकित्सा करने लगे। पर कणवड़ी  
बेहोश होने का बादक किम रहा-



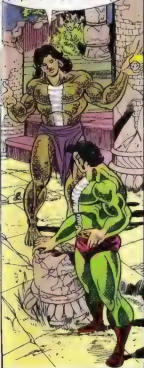
वह असल वह असावत्या की गत का  
इंतजार कर रहा था जितना स्वयं-  
चंद कुछ भी होके कणवड़ी मणिधरी  
नपों की शक्ति क्षीण होती है-

सक दिन वह ही असावत्या थी और  
उसी जंगल कणवड़ी ने अपने धातक तंत्र-  
मंत्र चलाकर मेरे परिवार के पांच लोगों  
को बेहोश कर दिया, और उनकी शक्ति  
घोल ली-



मैं सिर्फ अपनी  
रक्त के कारण बच गया, क्योंकि उस  
जंगल में मैं किसी देवदे के असावत्या हुआ था-

सोचकर जब मुझे सारी बात का पता चला तो मैं  
नुरत करणवड़ी की तरफ़ा में जिक्र पड़ा !  
अधिक दुर्घटना होने के कारण मेरा पूरा परिवार  
नष्ट हो गया है, और वे सब कलामी  
जंगली जानवरों का डिकार बन सकते हैं। इसारी  
मनियों में किसी की भी इच्छा उनकी सोच सकने  
की अव्युत्त क्षमता है, और करणवड़ी उसी के  
साथे इतना शक्तिशाली बन गया है !



मायना खतरनाक है ! अगर मैं अहजवर  
वसियों की थोड़ी सी इच्छा अपनी उसे इनका  
शक्तिशाली बना सकती है, तो जब उसकी  
शक्ति और बढ़ेगी, तब वह क्या करेगा !  
क्या हो सकती है उसकी योजना ?

यह तो पता नहीं  
नजरान ! पर करणवड़ी  
की शक्ति का एक ही  
तरीका है। पाँचों मणियों  
को देखकर उसकी अपने  
कामों में ले लेना ! परन्तु  
की स्थिति का पता सिर्फ  
करणवड़ी ही जानता है !



करणवड़ी की उसी भी थोड़ी  
सी शक्ति की जरूरत है ! और यह  
शक्ति उसे जल्दी चाहिए ! वह धीरे-  
धीरे जिलने वाली इच्छाशक्ति का  
इस्तमाल नहीं कर सकता ! क्योंकि  
अब उसे तुमसे और मुझसे खतरा  
है !



यह शक्ति वह एक दूसरी जगह से  
प्राप्त करने की बात कर रहा था !  
वह जगह कौन सी हो सकती है ?

करणवड़ी किसी सम्मोहन घाटी  
इन्सान का जिक्र कर रहा था ! शायद  
वह उसी की दृष्टि ! ताकि उसकी  
तत्समोहन शक्ति को धनिकर अपनी  
इसकरी को पूरा कर सके ! पर वह  
इन्सान है कौन ?

मैं उसे जानता हूँ ! आओ  
हम अपनी योजना बनाते  
हैं !



कमलवल्ली की राज की तलाश थी-

यह है वह ऐतिहासिक स्थान जहाँ पर आज कुछ देर पहले एक अज्ञात व्यक्ति द्वारा तैल-फेड़ की गई!

जो लक्ष्मण एक घंटे के बाद भारतीय न्यूज चैनल के लिए तैल-फेड़ प्रसारण कर रहा था-

पहले पर तैल-फेड़ कर्मियों के अनुसार वह एक गलतफहमी था, जिसे जागराज ने रोकने की कोशिश की! परन्तु...



राज बेवकूफ था कि कलरा वल्ली की मजदूरी उस पर पड़ चुकी है-

और जब इसी न्यूज टीवी यहाँ पर पहुँची तो यहाँ पर कोई भी नहीं था। जागराज और अपने खिचा देने के लिए उपलब्ध नहीं था। इस समय की आवा की जानकारी भारतीय न्यूज चैनल पर देने रहेगी!



जानकारी देने की आवश्यकता नहीं है...



अरे! वल्ली है! यह तो वल्ली है! मैं तो सब के हालात आजने के लिए तैल-फेड़ देख रहा था! पर मुझे क्या पता था कि इसकी मजदूरी जाल द्वारा दूँदने ने पहले ही यह मेरी अर्जित के तैल-फेड़ आ खड़ा होगा!

... अब देर करना उचित नहीं है! मैं जिन मेरे औरों के मजदूरी है!



... अब तुम्हारे दुश्मनों की जो जानना है, वह वे खुद ही देख लेंगे!



कमलवल्ली! तु... तुम यहाँ पर? और तुम कुछ कैसे रहे हो?

कोई फोड़! परत अपनी जिन्दगी को इस नजर से देखें कि क्या वे वास्तव में कर रहे हैं? वे तो केवल एक आदमी के लिए हैं, जो जिन्दगी को पूरा करने में सक्षम है।

वह तो आप जैसे  
महाजलोज ही करते हैं श्री  
करजवल्लीजी; पर आज  
आप साजसे आ ही गये हैं  
तो एक इन्टरव्यू...

कैलाशमौल ने दुर्जना  
खबर, ऑफिस में  
पहुँचा दी-

मैडम : राजब हो गया। कनपका  
मिस्टर राज को उठा ले गया है !  
पुलिस की आंखों के सामने से !  
आप... आप तुलन कुछ  
कीजिये !

ओह! यह क्या हुआ?  
म... मैं कुछ करती  
हूँ! ओं को!

क्या लखन है  
आजही ?

दुःख! अलख दुःख! पर  
लोकान्त में तुझे अपने  
साथ ही आकर!

आइए हैं! राज!

### नाल का स्थान

पल्लव के लिए एक चमकदार रोशनी से घिर गया—

और किसी के कुछ तस्कर पाते  
तो पहचाने ही वे सुध राज की कनकड़ी  
(अपने लालते जगता था—



राज की कल्पवृक्षी  
उठा ली गयी है !

ਗੁਭ। ਕੋਈ  
ਗੁਭ।

करणवड़ी, 'राज' की महाद्वार के पक्ष के एक स्कॉट स्थल तक ले आया था-

तू अपने-आप में एक रहस्य है मानव! तैरे अन्दर भीषण सम्बोधन क्षमता है, और तू उसका प्रयोग भी करता है। परन्तु फिर भी अपना जीवन एक मामूली सुवधार बनकर जीना चाहता है!...

...वैर मुझे क्या? मुझे तो तैरी यह सम्बोधन क्षमता मोहती है, जो लाखों मानवों की सम्मिलित इच्छाक्षमता के बराबर है! उसको पाकर मैंरी दार्शनिक ऊर्जा सैपू हो जायेगी!

और फिर शून्य होटी, बुझिया की गुलाम बनने की सैरी योजना!

करणवड़ी की मानसतरंगों राज की औरों के हान्ते से उसकी सम्बोधन क्षमता की स्वीचने लगी-

पर कुछ मिनटों तक वह मिला मिलप चुमने के बाद करणवड़ी चीक उठा-

अरे! सम्बोधन क्षमता स्वतः हुतली ही क्षमता थी इन्सुली? यह कैसे हो सकता है! वैर, इन्सुली हूँ कि...

...अब जरा इधर भी देख लो करणवड़ी! तुम्हारा स्वील रबल हो चुका है!

कोज? य... यहाँ पर कौन आ गया?

मैं नागराज! और ये रही तुम्हारी बे मणियाँ, जिनके बूते पर तुम न जाने कौन सी दोतली योजना बुल रहे थे!

रू...तुने ये मणियाँ कैसे दूदी? कैसे पता लगा तुम्हें इनकी स्थिति का?

मैंने बताया! दरजमान हल हो लूँगी हैं ५५५ जी दिखते हैं! हलजल है, नागु! और ये रूप बलाअली मणि क्षमता द्वारा बनाम हल ये! मतलब जीन! जहाँ सम्बोधन?

हैं?

मेरा स्वामी है ना! इसकी पता था कि तुम राज को ही बुंदने जाओगे। अतिरिक्त ससोहन अपनी पत्नी के लिए। अब ये मत पूछना कि यह हमकी कैसे पता था।

बन। इस राज को टी.वी. पर ले गए। और तुम उसे देवता ही बना पर उस धर्म के। तुमकी आने तो हम कोई और समान। अर्थात् पर तुम आवास। और 'राज' को अपने साथ ले आए।

अब जिन वक्त तुम राज यानी नंदू का दिमाग टटोलकर ससोहन अपनी स्वीच रहे थे, नाह तुम्हारे दिमाग को टटोलकर मणियों की स्थिति का पता लगा रहा था, और मुझे आज तक सैकड़ प्रेषित करते आ रहा था।



मेरा स्वामी अब शुरू होना नाराज। क्योंकि मुझे जबरन शुरु अपनी लिल गड़ है।

और उसमें से एक रौझनी का जाल निकलकर आकाश पर धाले लगा-

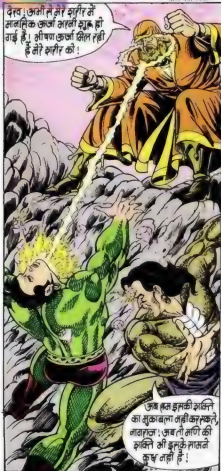
और मैं मणियों को उन-उन स्थानों से खींचकर निकालना आ रहा था, जहाँ पर तुमने इनकी दबाव हुआ था। अब तुम इन मणियों का इस्तेमाल किसी की भी इच्छा करके स्वीचने के लिए कर सकते। तुम्हारा स्वामी स्वतः ही गया है करणवड़ी।



देव मेरा स्वामी! मैं ही उस योजना की शुरुआत देव, जिनके लिए फूटकर हवा में सेने वृत्तन सब किया।

देव नाराज! यह ससोहन जाल है, जो अब सारी दुनिया पर धासगा। और जो असर नरामणियों महा-नगर वास्तियों पर कर रही थी, वह अगले यह तरी दुनिया के नगरों पर करेगा। सबकी इच्छा करके स्वीचकर मैं अन्दर स्थ-गति कर देता। और मुझे बस देता इस दुनिया का झड़झड़।

देख! अभी से मेरे शरीर में  
सात्वतिक ऊर्जा आनी शुरू हो  
गई है! शीघ्र ऊर्जा मिल रही  
है मेरे शरीर को!



अब तक इसकी शक्ति  
का मुकाबला नहीं कर सकते,  
नाराज! अब तो मणि की  
शक्ति भी इसके सामने  
कुध नहीं है!

इसके शरीर से निकलती सात्वतिक ऊर्जा की  
ओषण तरंगों ने मेरे दिमाग को ऐसे थपड़े दे रही  
हैं, जैसे कोई ताव तनु दी तुफान के थपड़े को  
केलती है!... पर इसको रोकना ही होगा नाराज!  
रोकना ही होगा!



यह असंभव है नाराज!  
इसके सस्कोहन जाल को कोई ऐसा ही विकल्प  
विपरीत सस्कोहन जाल ही नाष्ट कर सकता है और  
ऐसा सस्कोहन जाल जो पूरी दुनिया पर फैल सके,  
वह कायद इन्क़ाब में किलों के पास नहीं है!

सम्बोधन जाल! हाँ एक रास्ता है  
नया! हर नाग के अन्दर सम्बोधन  
होता है! यही नागों का एक विकल्प  
जाल, सम्बोधन जाल की तरह  
ही काम करेगा!

पर इतने लाखों-  
करोड़ों नाग आपसे  
कहाँ से नागराज ?

हालाँकि इतने में एक बेजाल नाग की  
तरह रह जाऊँगा! पर यह स्वतन्त्र मुझे  
उठाना ही होगा!



मेरे  
शरीर से नया! मेरे  
शरीर से!

अपने साँपों को शरीर से निकालकर पूरी  
पृथ्वी पर एक विपरीत सम्बोधन नया जाल  
फैलाने के साथ-साथ अपने शरीर में साँपों  
को विसृजित भी करते रहता-

नागराज ध्यान  
मुद्रा में बैठ गया! अब उसका लक्ष्य सिर्फ एक था-

परन्तु यह कठिन प्रक्रिया, नागराज के  
शरीर में तेज आवश्यक जीवन वस्तुओं को  
भी ख़त्म करती जा रही थी, और नागराज  
को जीवित रहने के लिए आवश्यक थे-



ताकि जाल की सततता टूटने का पाप-





तप जाल, उतनी ही तेजी से फैल रहा था, जितनी तेजी से कणवशी का समूह जाल अपना आकार बढ़ा रहा था।

य... यह क्या हो रहा है ?  
इतने सारे तप कहां से आ रहे हैं ? ये- ये तोरे समूह जाल की संधियों को तोड़ रहे हैं !

मेरा जाल लुप्त हो रहा है !  
सिस्ट रहा है ! मेरी वांछना स्वक में मिल रही है !... नागराज !  
यह तप जाल तु बिका रहा है !

तेरे तप जाल ने सिर्फ मेरे समूह जाल को ही नहीं, मेरी जिवंदगी के मकलप को भी लुप्त कर दिया है ! और इसके लिए अब मैं तुझे लुप्त कर दूंगा !

नागराज की तरफ बढ़ते, कणवशी के उन घातक वार को-

नाबू ने अपने करीर पर केल लिया-

आइस बचो नागराज !

कैसे बचेगा नागराज ?  
पहला वार तो तुने केल लिया ! पर अब उसे कोन बचायगा ?

सचमुच ! मुझसे तो अब डिलने की भी शक्ति नहीं है ! कणवशी जैसे शक्तिशाली का मुकाबला अब मुझे कैसे करना ! नहीं ! मुझे हार नहीं माननी है ! नहीं माननी है !

केचन की तरह रेंडाना नगराज का  
झारो इधर-उधर रेंगने लगा-



हा हा हा ! अब तो मुझे इस खेल में  
मजा आ रहा है !... तू कीड़ी की तरह  
रेंग-रेंगकर मरने से बचना चाहता है। पर  
तेरी चाल तो बाघ से भी सुस्त है !...  
करणवल्ली के वार से चीता नहीं बच  
सकता तो घोंघा क्या बचेगा !

मैं बच नहीं रहा  
हूँ, करणवल्ली ! मैं  
तेरी शीत का नामज  
इकट्ठा कर रहा  
हूँ !

यहाँ पर कंकड़-  
पत्थरों के अलावा  
और है क्या ? क्या  
तू मुझे पत्थरमय  
मारकर मारेगा ?  
हा हा हा !



पत्थर ही लगको !  
कुछ नदाल पत्थर और  
रत्नों में फूक नहीं समझते  
हूँ !...



... मैं उन सर्प मणियों  
को इकट्ठा कर रहा था,  
जिनको मैं यहाँ पर लेकर  
आया था !  
और मेरे  
अन्दर अभी भी इतनी  
मानसिक कृपा मौजूद  
है...



... कि जब वे इन पांच मणियों से  
होकर गुजरेंगी, तो इतनी रजतिकासी  
हो जाएगी कि तुझे धूल चटा  
सके !



रही त ही कम से पूरी कर देता हूँ,  
माराज! और इससे पहले कि ये मेमल  
पत्त, मैं अपनी मणि की मदद से इसकी  
शक्ति भी खींच लेता हूँ। कम से कम  
वह सन्तोहन शक्ति तो वापस मिले  
जो इसने मुझसे छीनी है!

मलों के शरीर में  
वापस आते ही माराज की शक्ति  
तेजी से वापस आने लगी -

आsss ह!  
अब कुछ चल  
पड़ा!



तुम्हारे शरीर की जेल  
में। हालांकि इसके लिए  
मुझे मणि को त्यागना होगा।  
पर मैं इसके लिए तैयार  
हूँ!

पर तुम मेरे  
शरीर में क्यों रहना  
चाहते हो माराज?



अब मैं इस कणवर्षी  
की आँखों की पुतलियों में एक-  
एक विशेष सूक्ष्म सर्प बिठा दूँगा।  
जो इसकी सन्तोहन शक्ति को  
बाहर निकालने में पहले ही  
नष्ट करते रहेंगे! ...



एक जेल में  
मुझे भी जाना है  
माराज!

एक तो मुझे माराज  
करोड़ों वोल्ट मिलेंगे। और  
दूसरे तुम शहर में रहते हो!  
किसी देवता को खुद  
मिलेंगी!

फिल्में! हा हा हा! तुम्हारा  
किसी भूत काटव जिववगीभर  
नहीं उतरेगा। मैं तैयार हूँ। पर  
इससे पहले तुमकी अपने परिवार  
तक मणिवा पहुंचाकर आना  
होगा!



ओ के  
सह!